अभिभावक भी अपनी बेटियों के घर लौट आने की बाट जोह रहे हैं. धीरजन ने बताया कि आठ साल पहले छठी कक्षा में पढ़ने वाली उसकी बेटी राजमुनी को फूलमती नाम की एक महिला बहला-फुसलाकर अपने साथ दिल्ली ले गई. कुछ साल बाद फूलमती तो लौट आई लेकिन राजमुनी नहीं लौटी. बेटी के बारे में पूछताछ करने पर फूलमती ने उसकी पत्नी को तीन हजार रु दिए और वादा किया कि वह जल्द ही उनकी बेटी को लौटा देगी. कई साल बीत गए लेकिन राजमुनी वापस नहीं मिली. हां... एक बार उसकी चिट्ठी जरूर आई थी जिस पर कृष्णनगर, मकान नंबर एक/ दो, शिमला लिखा हुआ था. रोज कुआं खोदकर पानी पीने वाली परिस्थितियों के चलते धीरजन अपनी बेटी की तलाश में दिल्ली और शिमला नहीं जा पाए. लेकिन इसी गांव के जयनाथ की अनपढ़ पत्नी नाइहारी ने अपनी बेटी राजमनी का सुराग मिलते ही दलालों का पीछा किया. राजमनी को भी तेतरटोली गांव की हीराबाई ने अपने पति शिवनाथ के सहयोग से तब अगवा कर लिया था जब वह स्कूल से लौट रही थी. एक रोज जब हीराबाई अपने गांव लौटी तो नाइहारी ने तय किया कि वह भी दिल्ली जाएगी. उसने अपनी बेटी की वापसी के लिए जिद की तो हीराबाई उसे दिल्ली ले गई. दिल्ली पहुंचने के बाद हीराबाई रेलवे स्टेशन से फरार हो गई. इसके बाद दिल्ली में कई दिनों तक भटकने के बाद किस्मत से नाइहारी को उसके पास के गांव घोराघाट में रहने वाला एक परिचित मिल गया. उसने जैसे-तैसे टिकट की व्यवस्था की और नाइहारी को रांची की ट्रेन में बैठा दिया.

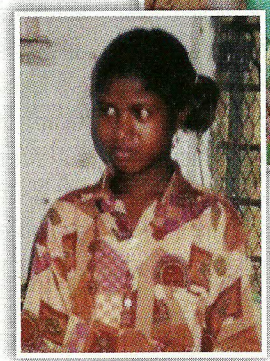

हताश भेलवाडीह गांव के जयनाथ अपनी पत्नी और छोटी बेटी के साथ; उनकी बड़ी बेटी राजमुनी (बायें) कई महीनों से गायब है

आशीष रंजनाथ

बस... ये आखिरी नोट बचा है साहब...

कांग्रेस की एक महिला विधायक प्रतिमा चंद्राकर ने विधानसभा के बीते सत्र में शून्यकाल के दौरान दुर्ग जिले के देवरी बंगला क्षेत्र से बड़ी संख्या में लड़कियों के गायब होने की सूचना दी थी. देवरी बंगला पहुंचने पर पता चला कि गांवों के स्कूलों में पढ़ने वाली कई लड़कियां पिछले कई दिनों से गायब हैं. हालांकि लड़कियों के गायब होने के मामले को पुलिस 'जवानी के दिनों की नादान भूल' बताकर अपना दामन बचाती हुई भी नजर आई, लेकिन इलाके के एक पत्रकार केशव शर्मा ने बताया कि इसका संबंध लड़कियों की तस्करी से है. केशव के मुताबिक दो साल पहले ग्राम फरदफोड़ के रहवासी वासुदेव हल्बा की नाबालिग लड़की ईश्वरी को संतराम और रोमन नाम के युवकों ने जयपुर में बेच दिया था. जब इस मामले में हो-हल्ला मचा तब पुलिस ने राजस्थान की दौड़ लगाई और लड़की खरीदने-बेचने के आरोप में कुछ लोगों की धर-पकड़ की. वासुदेव को तो उसकी बेटी मिल गई लेकिन इलाके में ही रहने वाले दो किसान दीपकराम और ढालसिंह की किस्मत वासुदेव जैसी नहीं थी. वे अब भी अपनी बेटियों को खोज रहे हैं. सामाजिक कार्यकर्ता सेवती पन्ना कहती हैं, 'ज्यादातर पुलिसकर्मी दलालों से पैसा खाकर उन्हें संरक्षण देने के काम में लगे हैं. हमने जशपुर जिले के 259 गांवों में सर्वे के दौरान कुछ दलालों को चिह्नित किया था. इन दलालों की सूची पुलिस को सौंपी गई थी, लेकिन मात्र दो-चार पर कार्रवाई की गई. हम बताते थे कि अमुक दलाल अमुक लड़की को लेकर जाने वाला है या जा रहा है तो पुलिस का जवाब होता था रंगे हाथ पकड़वाइए. अब रंगे हाथ का क्या मतलब होता है. क्या कोई लड़की का हाथ पकड़कर ले जाएगा तभी रंगे हाथ माना जाएगा?' सेवती के मुताबिक दलाल इतने चालाक होते हैं कि वे खुद किसी एक बस में बैठकर रवाना होते हैं तो लड़कियों को दूसरी बस से रवाना करते हैं. कई बार दलाल बस स्टैंड से बस में सवार होता है तो लड़कियां गांव के किसी मार्ग पर बस पकड़ती हैं. सिंगारपुर के किसान ढालसिंह ने बताया कि वह जब भी अपनी बेटी की तलाश में थाने का चक्कर लगाता है तो थाने वाले न केवल पैसों की मांग करते हैं बल्कि बेटी के चरित्र को लेकर उल्टा-सीधा सवाल दागने लगते हैं. जब हमने ढालसिंह से उसकी बेटी के गुम होने के बारे में पूरी बात जाननी चाही तो वह फफक पड़ा. आंसुओं और हिचकियों के बीच उसने कहा कि वह हमारी सेवा नहीं कर पाएगा. जब हमने 'सेवा का तात्पर्य' जानना चाहा तो पता चला कि गांव-गांव से सरपंचों के जन्मदिन का विज्ञापन बटोरने वाले कुछ कथित मीडियाकर्मी गरीब घरों से गायब होने वाली लड़कियों की खबरों को 'पगड़ी उछालना है तो बताओ, पगड़ी बचाना तो भी बताओ' कहते हुए सौदेबाजी के गंदे खेल में लगे हुए हैं. मीडिया के नाम पर हो रही यह सौदेबाजी हैरान करने वाली थी.

पुलिस पर आरोप लगता रहा है कि वह इन दलालों पर कार्रवाई करने की बजाय उन्हें संरक्षण दे रही है

रायगढ़ जिले के धर्मजयगढ़ ब्लॉक से 30 किलोमीटर दूर एक गांव मढवाताल में हमारी मुलाकात रामसिंह सारथी से हुई. रामसिंह ने हमें अपनी बेटी के गुम हो जाने के बाद थाने में की गई शिकायत का कागज दिखाया. उसकी फोटो और कपड़े भी. रामसिंह ने बताया कि उसकी बेटी बुधनी को खम्हारगांव का गिरधारी कहीं ले गया है. उसने बुधनी के गायब होने के बाद सरिया और कहवापानी गांव की लड़कियों के गुम होने की जानकारी भी हमें दी. जब हम उसे हिम्मत रखने की सलाह देकर विदा लेने लगे तो रामसिंह ने हमें रुकने के लिए कहा और कमरे में कुछ ढूंढ़ने लगा. थोड़ी देर बाद उसके हाथ में एक 50 का नोट था. उसका कहना था, 'साहब... बेटी को खोजते-खोजते 7000 का कर्जा हो गया है. मैं कुछ नहीं दे सकता... बस... ये आखिरी नोट बचा है....मेरी बेटी वापस दिलवा दीजिए साहब', रामसिंह फूट-फूटकर रोने लगा था.'